Impact Factor (IIFS): 8 ISSN: 2231-1351

पदचिन्ह PADCHINHA

जून (June) 2025 वर्ष (Vol.): 14 अंक (Issue): 6

अनुक्रम

	संपादकीय	पृष्ठ संख्या
1.	ऑनलाइन अध्ययन का महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन _**अनीता यादव _डॉ. चन्दन सहारण**	01-09
2.	सुशीला टाकभौरे के कथासाहित्य में दलित जीवन _**अश्विनी किसन वायदंडे _डॉ. नानासाहेब जावळे**	10-19
3.	निज़ामाबाद (आजमगढ़) की पारंपरिक हस्तशिल्प कला एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर _**अनुराग सिंह**	20-28
4.	पंचायती राज व्यवस्था में सत्ता, वर्ग और वर्चस्व ग्रामीण भारत में मार्क्सवादी दृष्टिकोण _**डॉ. स्मिता भगत**	29-34
5.	Nature's Sublime Resistance: An Ecocritical Study of Environmental Consciousness in the Works of Wordsworth… _**Dr. Chhaya Singh**	35-39
6.	Public Broadcasting and Information warfare: Op Sindoor Context _**Kshitiz Dwivedi**	40-50
7.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मीडिया नैतिकताः एक आलोचनात्मक मूल्यांकन _ **डॉ. विजयेन्दु चतुर्वेदी**	51-60
8.	A Study of the Impact of Higher Secondary Teacher's Attitude towards Inclusive Education _**Dr. Vindeshwari Prasad Singh**	61-67
9.	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की पत्रकारिता और सामाजिक-आर्थिक समानता का विचार _**डॉ. नीलेश साहू _डॉ. ओमप्रकाश**	68-74
10.	Impact on the Social Well-Being of Children: Fostering and Safeguarding _**Manisha Bose _Soumik Bose**	75-80
11.	भारतीय समाज पर स्वच्छ भारत मिशन का प्रभाव _**सुधीर कुमार पाण्डेय _प्रो. हेमन्त कुमार मालवीय**	81-89
12.	सिक्किम राज्य में हिमनद झील के फटने से आने वाली बाढ़ और आपदा उपरांत आवश्यक मूल्यांकन… **प्रो. वीरेन्द्र सिंह नेगी, डॉ. सुमन दास, डॉ. गौरव नैन, लिंग्थुई कामेई_ डॉ. हिमांशु मिश्रा, डॉ. दिलिप कुमार, डॉ. मिराना देवी, डॉ. नवल प्र.सिंह, प्रो. सुरेश कु. बन्दुनी, मधु शर्मा**	90-100
13.	कामायनी की वैश्विक चेतना की प्रासंगिकता _**डॉ. अखिलेश कुमार त्रिपाठी**	101-106
14.	आदिवासी जीवन दर्शन _**डॉ. सुनील केरकेट्टा**	107-114
15.	रायपुर सूटकेस हत्याकांड और प्रिंट मीडिया में महिला अपराधी के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन _**डॉ. धनेश जोशी _संजीव खुद्शाह**	115-125
16.	पेड न्यूज और भारतीय पत्रकारिता : लोकतंत्र पर प्रभाव _**घनश्याम लाल _डॉ. अजय कुमार** सिंह	126-133
17.	'शाम भर बातें' उपन्यास में प्रवासी भारतीयों की स्थिति _**भावना _डॉ गीता पांडे**	134-139
18.	श्रीमद भगवदगीता में योग की अवधारणा का दार्शनिक विश्लेषण _**राजवीर कुमार**	140-144

संपादकीय

'पदचिन्ह' पत्रिका का यह अंक सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और पर्यावरणीय विमर्शों का एक समृद्ध संकलन प्रस्तुत करता है, जो समकालीन भारत और वैश्विक परिदृश्य के ज्वलंत मुद्दों को उजागर करता है। इस अंक में प्रकाशित शोध पत्र विविध विषयों पर गहन विश्लेषण और नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो न केवल बौद्धिक चिंतन को प्रेरित करते हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी मार्गदर्शन करते हैं।

इस अंक में शामिल शोध पत्र विभिन्न क्षेत्रों को समेटते हैं। अनीता यादव और डॉ. चन्दन सहारण का शोध ऑनलाइन अध्ययन के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों पर प्रभाव को तुलनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है। वहीं, अश्विनी किसन वायदंडे और डॉ. नानासाहेब जावळे सुशीला टाकभौरे के कथासाहित्य में दलित जीवन की संवेदनशील प्रस्तुति को उजागर करते हैं। अनुराग सिंह निज़ामाबाद (आजमगढ़) की पारंपरिक हस्तशिल्प कला को सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर के रूप में रेखांकित करते हैं।

पंचायती राज व्यवस्था में सत्ता और वर्चस्व के मार्क्सवादी दृष्टिकोण को डॉ. स्मिता भगत ने गहराई से विश्लेषित किया है, जबकि डॉ. छाया सिंह वर्ड्सवर्थ के साहित्य में पर्यावरणीय चेतना की पर्यावरण-आलोचनात्मक पड़ताल प्रस्तुत करती हैं। क्षितिज द्विवेदी ने ऑपरेशन सिंदूर के संदर्भ में सार्वजनिक प्रसारण और सूचना युद्ध के आयामों को खोला है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मीडिया नैतिकता पर डॉ. विजयेन्दु चतुर्वेदी का आलोचनात्मक मूल्यांकन समकालीन मीडिया विमर्श को नई दिशा देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में, डॉ. विंदेश्वरी प्रसाद सिंह समावेशी शिक्षा के प्रति उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। डॉ. नीलेश साहू और डॉ. ओमप्रकाश डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की पत्रकारिता और सामाजिक-आर्थिक समानता के विचारों को रेखांकित करते हैं। मनीषा बोस और सौमिक बोस बच्चों के सामाजिक कल्याण पर पालक देखभाल और संरक्षण के प्रभावों की पड़ताल करते हैं, जबकि सुधीर कुमार पाण्डेय और प्रो. हेमन्त कुमार मालवीय स्वच्छ भारत मिशन के सामाजिक प्रभाव को विश्लेषित करते हैं।

सिक्किम में हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ और आपदा प्रबंधन पर प्रो. वीरेन्द्र सिंह नेगी और सह-लेखकों का शोध एक महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दे पर प्रकाश डालता है। डॉ. अखिलेश कुमार त्रिपाठी कामायनी की वैश्विक चेतना की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हैं, जबकि डॉ. सुनील केरकेट्टा आदिवासी जीवन दर्शन की गहराई को उजागर करते हैं। रायपुर सूटकेस हत्याकांड और प्रिंट मीडिया में महिला अपराधी के चित्रण पर डॉ. धनेश जोशी और संजीव खुद्शाह का अध्ययन सामाजिक धारणाओं पर सवाल उठाता है। अंत में, घनश्याम लाल और डॉ. अजय कुमार सिंह पेड न्यूज और भारतीय पत्रकारिता के लोकतंत्र पर प्रभाव को गंभीरता से विश्लेषित करते हैं।

यह अंक समाज, संस्कृति, शिक्षा, पर्यावरण और मीडिया जैसे क्षेत्रों में गहन चिंतन और समाधान-उन्मुख दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। हम आशा करते हैं कि ये शोध पत्र पाठकों को न केवल विचारोत्तेजक सामग्री प्रदान करेंगे, बल्कि सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तन की दिशा में भी प्रेरित करेंगे। आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए अमूल्य हैं। 'पदचिन्ह' के इस अंक को पढ़ने के लिए धन्यवाद।

संपादक (पदचिन्ह)